साधकों का
मासिक प्रेरणा

वार्षिक शुल्क रु. 30/-
आजीवन शुल्क रु. 500/-

बुद्धवर्ष 2553, माघ पूर्णिमा, ३० जनवरी, 2010 वर्ष 39 अंक ८

For Patrika in various languages, visit: http://www.vridhamma.org/Newsletter_Home.aspx

धम्मवाणी

सिञ्च भिक्खु इमं नावं, सित्ता ते लहुमेस्सति।
छेत्वा रागञ्च दोसञ्च, ततो निब्बानमेहिसि॥

धम्मपद- ३७०, भिक्खुवग्गो

हे भिक्षु (साधक)! इस (आत्मभाव नाम की) नाव को उलीचो, उलीचने पर यह तुम्हारे लिए हल्की हो जायगी। राग और द्वेष (रूपी बंधनों) का छेदन कर, फिर तुम निर्वाण को प्राप्त कर लोगे।

[बुद्धजीवन-चित्रावली]

['महामानव बुद्ध की महान विद्या **विपश्यना** *का उद्गम और विकास' की जानकारी देने वाले सभी चित्रों को चित्र-प्रदर्शनी (आर्ट गैलरी) में लगा दिया गया है। इनके द्वारा भगवान बुद्ध के जीवनकाल की कुछ महत्त्वपूर्ण घटनाओं की जानकारी मिलेगी। चित्रावली के सभी* **१२२ चित्रों** *को आर्टगैलरी में यथास्थान सजाया गया है। (बुद्धकालीन ऐतिहासिक घटनाओं की ये चित्रकथाएं इस बात को सिद्ध करती हैं कि बुद्ध ने लोगों को सही माने में प्रज्ञा में स्थित होना सिखाया। स्थितप्रज्ञ* **'ठितपञ्ञो'** *होने की ही शिक्षा दी। उन्होंने किसी एक व्यक्ति को भी* **'बौद्ध'** *नहीं बनाया, बल्कि धार्मिक बनाया। पूरे तिपिटक में 'बौद्ध' शब्द ढूंढने से भी नहीं मिलता। जो मिलते हैं वे –* **'धम्मी, धम्मिको, धम्मट्ठो, धम्मचारी, धम्मविहारी'** *.. आदि ही मिलते हैं। उन्होंने शील, समाधि और प्रज्ञा द्वारा विपश्यना का अभ्यास करना सिखाया। वे स्वयं प्रज्ञा में स्थित हुए और उनके बताये मार्ग पर चलने वाले लोग किस प्रकार प्रज्ञा में स्थित हुए – ये बातें इन चित्रों और चित्रकथाओं में स्पष्ट रूप से दर्शायी गयी हैं।)*

*इन चित्रों की वृहत् पुस्तक '***बुद्धजीवन-चित्रावली***' सजिल्द छप गयी है जो कि अत्यधिक आकर्षक, टिकाऊ और सुंदर है।* **वी.सी.डी./डी.वी.डी.** *भी बन गयी है।*

इस चित्रावली की अनेक चित्र-कथाओं को हम पहले से ही प्रकाशित करते आ रहे हैं। अब जो कथाएं शेष हैं, उन्हें ही आगे बढ़ायेंगे। सं.]

सही अरहंत हुए

निरंजरा नदी के ही किनारे कुछ दूरी पर उरुवेल कस्सप का छोटा भाई नदी कस्सप अपने ३०० शिष्यों के साथ तथा उसके कुछ और आगे निरंजरा के तट पर ही दूसरा भाई गया कस्सप अपने २०० शिष्यों के साथ अग्नि तपश्चर्या में लीन थे। वे सभी अपने आप को अरहंत मानते थे और इसी विरुद के आधार पर लोगों द्वारा पूजे जाते थे।

उन्होंने देखा कि निरंजरा नदी में सिर की जटाएं और चेहरे के बालों के गुच्छे तिरते हुए चले आ रहे हैं। कहीं ये केश-राशियां उनके अग्रज तथा उसके शिष्यों की तो नहीं? उरुवेल पहुँच कर उन्होंने देखा कि सचमुच अग्रज और उसके ५०० शिष्य सभी सिर और चेहरों से मुंडित हैं। बड़े भाई ने बताया कि हम सब मिथ्या अरहंत के धोखे में निमग्न थे। सही विद्या तो इस महाश्रमण ने हमें सिखायी, जिससे कि हम वास्तविक रूप से अरहंत हुए। तुम्हें भी सही अरहंत होने की विद्या इसी से सीखनी चाहिए और सही माने में अरहंत अवस्था प्राप्त करनी चाहिए। इसी में हमारा कल्याण है। मिथ्या अरहत्व हमें भवसागर से मुक्त नहीं करा सकता।

उन दोनों भाइयों और उनके ५०० शिष्यों ने भी समझा कि वास्तविक प्रज्ञा प्राप्त करने के लिए पहले शील में प्रतिष्ठित होना आवश्यक है, फिर सम्यक समाधि में प्रतिष्ठित होना अनिवार्य है। सम्यक समाधि वह जिसमें चित्त को एकाग्र करने के लिए अपने ही शरीर से संबंधित किसी अंग की सच्चाई का आलंबन ग्रहण करना होता है। भगवान इसके लिए अपने ही यथार्थ श्वास-प्रश्वास के आवागमन की सच्चाई का आलंबन ग्रहण करवाते हैं। इसमें पुष्ट होने पर ही सही माने में प्रज्ञा में पुष्ट करवाते हैं।

प्रज्ञा तीन प्रकार की होती है। पहले हम प्रज्ञा के बारे में जो कुछ सुनते हैं, उसे श्रुत प्रज्ञा कहते हैं। दूसरे प्रज्ञा संबंधी उस सुनी-सुनाई बात पर हम चिंतन-मनन करते हैं। उसे चिंतन-मनन द्वारा सही समझ कर स्वीकार कर लेते हैं। यह चिंतनमयी प्रज्ञा कहलाती है। सही प्रज्ञा अभी दूर है।

शील और सम्यक समाधि में पुष्ट हुए बिना भी कोई श्रुतप्रज्ञा और चिंतनप्रज्ञा में निष्णात हो सकता है। परंतु वास्तविक प्रज्ञा शील और सम्यक समाधि में पुष्ट होने के पश्चात प्राप्त होती है। हमारा सद्भाग्य है कि हमें श्रमण गौतम जैसा मार्गदर्शक मिला। मैं और मेरे शिष्यों ने भगवान के बताए मार्ग पर चलते हुए शील, समाधि में पुष्ट होकर, श्रुत प्रज्ञा और चिंतनप्रज्ञा के आगे बढ़ते हुए भावनामयी प्रज्ञा को भगवान के आदेश द्वारा पुष्ट किया। तभी स्रोतापन्न, सकृदागामी और अनागामी अवस्थाओं में से गुजरते हुए आगे बढ़े। इससे हमारी राग, द्वेष और अहंकारमयी अविद्या का मूलोच्छेदन हो गया। तभी हम सही माने में आस्रवमुक्त अरहंत हुए।

तुम्हें भी भगवान की शिक्षा का अनुकरण कर सही माने में आस्रवमुक्त अरहंत अवस्था प्राप्त करनी चाहिए। धोखे से मुक्त होना चाहिए। तदनंतर अन्य लोगों के कल्याण में संलग्न होना चाहिए।

दोनों अनुजों और उनके शिष्यों ने भी ऐसा ही किया और पूर्व जन्मों की विपुल पारमी संपन्न होने के कारण अल्प समय में ही अरहंत अवस्था प्राप्त कर ली। इस प्रकार १००३ सही अरहंत भगवान के साथ हो गये।

विशिष्ट कृतज्ञता सम्मेलन

रविवार १७ जनवरी २०१० को विश्व विपश्यना पगोडा के विशाल कक्ष में हजारों लोगों की उपस्थिति में पूज्य गुरुदेव श्री सत्यनारायण गोयन्काजी ने अपने परम पूज्य गुरुदेव सयाजी ऊ खिन के प्रति अत्यंत भावभीनी कृतज्ञता व्यक्त करते हुए अपने बारे

में संक्षेप में बताया कि वे किस प्रकार सयाजी ऊ बा खिन के कारण ही पुराने कट्टरपन से बाहर निकल सके और किस प्रकार वे स्वयं एक द्विज बन सके। द्विज माने जिसका जन्म दो बार हो। मनुष्य का जन्म तभी सार्थक होता है जबकि वह अज्ञानता की खोल तोड़ कर प्रज्ञाधर्म में स्थापित हो सके अर्थात जैसे अंडे की खोल टूटने पर कोई चूजा बाहर निकलता है। इस प्रकार उन्होंने धर्म के सार्वजनीन स्वरूप को समझाया और उदाहरण के साथ कृतज्ञता के गुण समझाये। उन्होंने विश्वभर के सभी साधकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की परंतु विशेष कृतज्ञता उनके प्रति, जिन्होंने प्रारंभिक दिनों में धर्म को स्वीकार किया। यदि ऐसा न होता तो यह सारे विश्व में कैसे फैलता?

उन्होंने यह भी बताया कि भारत में बुद्ध के बारे में फैली अनेक गलत धारणाओं के बावजूद वे किस प्रकार सयाजी के निर्देश पर धर्मप्रसार के काम में लगे और उन्हीं की छत्रछाया में उन्हें इस धर्मदूत के काम में सफलता मिली। इस सफलता का सारा श्रेय सयाजी ऊ बा खिन और सद्धर्म को जाता है। इस बारे में उदाहरण देकर समझाया कि 'मेरे तो दो हाथ, हजारों हाथ धर्म के'। विश्व भर के हजारों लोग इस समारोह में सम्मिलित हुए। इन हजारों हाथों में से कुछ विशिष्ट लोगों के नाम लेकर उनके विशिष्ट सहयोग के बारे में बताते हुए कृतज्ञता व्यक्त की। अनेक लोग जो अति वृद्धावस्था या रुग्णावस्था के कारण इस समारोह में नहीं आ सके अथवा कुछ लोग जो अब हमारे बीच नहीं रहे, उनके प्रति भी विशेष आभार व्यक्त किया।

दोपहर के प्रवचन में पूज्य गुरुदेव ने पगोडा-निर्माण का उद्देश्य और उसकी उपयोगिता के बारे में समझाया। पत्थरों से निर्मित यह विशाल पगोडा शताब्दियों तक वैसे ही याद किया जायगा जैसे कि २३०० वर्ष पूर्व भारत से भगवान की शिक्षा पड़ोसी देशों में गयी तब वहां बर्मा में श्वे-डगोन तथा अन्य सहस्राधिक पगोडाओं का निर्माण हुआ। इसी प्रकार थाईलैंड, कंबोडिया, लाओस तथा इंडोनेसिया तक इन पगोडाओं का निर्माण हुआ। वे सहस्राधिक वर्षों के बीतने पर भी आज तक भारत के उपकार के स्मारक बने हुए हैं और स्थानीय लोगों में भारत के प्रति, विशेषकर सम्राट अशोक के प्रति असीम श्रद्धा जगाते हैं। इसी प्रकार सहस्राधिक वर्षों तक यह विशाल पगोडा बर्मा और सयाजी ऊ बा खिन के प्रति श्रद्धा जगाता रहेगा और बर्मा में गुरु-शिष्य परंपरा से जीवित इस भूली हुई कड़ी की भी याद दिलायेगा। पगोडा में भगवान बुद्ध के पावन अस्थि अवशेषों के सन्निधान के कारण यहां तपने वाले साधकों की साधना को बल मिलेगा तथा अन्य श्रद्धालुओं केलिए श्रद्धा-ज्ञापन का हेतु भी बनेगा।

कई पुराने साधक पूज्य गुरुदेव से मिल कर अत्यंत प्रसन्न हुए। पूज्य गुरुदेव भी इतने सारे पुराने साधकों से मिल कर अत्यंत हर्षविभोर और भावविभोर हुए।

यह सारा कार्यक्रम इंटरनेट पर कभी भी देखा जा सकता है। इसके लिए कृपया निम्न वेबसाइट देखें –

www.vridhamma.org/webcast.aspx

कार्यक्रम के अंत में सायंकाल हुए पत्रकार सम्मेलन में पूज्य गुरुदेव ने बताया कि विपश्यना साधना किस प्रकार छात्रों, किसानों, पुलिस अधिकारियों के लिए ही नहीं बल्कि सभी प्रकार के लोगों के लिए अत्यंत हितकारी है। इसका नियमित अभ्यास आत्महत्या जैसे घृणित कृत्यों से बचाता है और उन्हें शांतचित्त कर्तव्यनिष्ठ बनाता है। यह संदेश अनेक समाचार पत्रों में छपा और कई टी.वी. चैनलों पर प्रसारित हुआ। आस्था चैनल ने कार्यवाही का सीधा प्रसारण किया और दूसरे दिन प्रातः पुनः प्रसारित किया।

उन सब का मंगल हो!

कृतज्ञता ज्ञापन का शेषांश –

उपरोक्त कार्यक्रम में पगोडा-निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले उपस्थित मेरे धर्मपुत्र मदन मुथा, महासुख खांधार, आर्कीटेक्ट वर्मा व डुमसिया और चित्र-प्रदर्शनी के चित्र बनाने वाले मुख्य कलाकार वासुदेव कामथ जैसे लोगों के नाम नहीं लिये जा सके। ऐसे ही अर्थर निकल्स, डैनियल मेयर, डॉन और सैली ने पिछड़े देशों में धर्मप्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इस कार्यक्रम में आये कुछ हजार लोगों के अतिरिक्त सारे विश्व में फैले मेरे सभी धर्मपुत्र और धर्मपुत्रियां, जिन्होंने अपने अनमोल जीवन के दस दिन देकर मुझे धर्मदान देने के महान पुण्य का भागीदार बनाया, मैं उन सब के प्रति भी कृतज्ञता प्रकट करता हूं। धर्मपथ पर उनकी सतत प्रगति होती रहे, इस निमित्त मेरी मंगल मैत्री प्रेषित करता हूं।

सत्यनारायण गोयन्का.

आवश्कता है
अर्थोपार्जन के साथ धर्मसेवा का सुनहरा अवसर

कृतज्ञता ज्ञापन स्वरूप निर्मित विश्व शांति स्तूप (ग्लोबल विपश्यना पगोडा) विश्व में बिनास्तंभ का सबसे बड़ा डोम है। इसे देखने के लिए प्रतिदिन सैंकड़ों की संख्या में लोग आने लगे हैं। इस परिसर को और अधिक चित्ताकर्षक बनाया जा रहा है। अद्भुत चित्र-प्रदर्शनी (आर्ट गैलरी) बन गयी है परंतु अभी उसमें बहुत काम शेष है। यहां आने वालों की सुख-सुविधा के लिए अभी बहुत से काम करने हैं, जिसमें फूड प्लाजा भी शामिल है। बर्मा द्वार, अतिथिशाला, जल-संरक्षण आदि के अतिरिक्त निर्माण के लिए अभी बहुत कुछ करना है। इन सब को सफलतापूर्व संपन्न करने और रख-रखाव के लिए अनेक कुशल और सेवाभावी ईमानदार लोगों की आवश्यकता है। इसके बदले में उन्हें निम्न प्रकार के लाभ होंगे –

१. सेवा और धर्मके प्रचार-प्रसार की पुण्यपारमी बढ़ाने का अवसर प्राप्त होगा।

२. अपनी स्वयं की साधना पुष्ट करने का सुअवसर प्राप्त होगा।

३. सम्यक आजीविका का सुनहला अवसर उपलब्ध है जिससे अपना भी भला होगा और परिवार का भी।

४. यथोचित वेतनमान दिया जायगा।

निम्न कार्यों में से जिस किसी काम में योग्यता हो, अपने बायोडाटा के साथ तदर्थ आवेदन कर सकते हैं।

१. प्राजेक्ट मैनेजर

– पगोडा साइट के सभी निर्माणाधीन कार्यों को सुचारुरूप से संपन्न कराना।

– सिविल इंजीनियर जो कम से कम १५ वर्षों तक बड़ी योजनाओं का संचालन किया हो।

– जिसे सुयोग्य व्यवस्थापन का अनुभव हो और लोगों से काम करवाने में दक्ष हो।

– स्थानीय पत्थरों से बड़ा निर्माण कर सकने की क्षमता वाले व्यक्ति को प्राथमिकता दी जायगी।

२. रख-रखाव के लिए योग्य सहायक मैनेजर

– बिजली तथा आधुनिक तकनीकी कार्यों को कुशलतापूर्वक संभालने में निपुण हो।

– बड़ी योजनाओं को संभाल पाने का ६ से ८ वर्ष का अनुभव हो।

३. बाजार से सामान खरीदने में दक्ष अधिकारी

– सामान खरीदने और उनका हिसाब रखने में निपुण हो।

– मुंबई के औद्योगिक बाजार की जानकारी हो।

– सिविल-मेकैनिकल डिप्लोमाधारी, ५ वर्ष का अनुभवी हो।

४. बिजली और उससे संबंधित आधुनिक तकनीकों में निपुणता

– आई.टी.आई. तथा सी लाइसेंस के साथ १०-१५ वर्ष का अनुभवी व्यक्ति, जो मोटरादि की समस्याओं को स्वयं हल कर सकने में सक्षम हो।

– इलेक्ट्रानिक कंट्रोल तथा टेलीकाम के संचालन व संभालने में दक्ष हो।

५. फिटर्स

– आई.टी.आई. फिटर्स के रूप में १०-१५ वर्षों का अनुभव हो।

६. प्लंबिंग और एयरकंडीशन मेकैनिक

– आई.टी.आई. प्लंबर जो किसी बहुआयामी बड़ी कंपनी में १०-१५ वर्ष तक काम किया हो।

७. हाऊस-कीपिंग और सुरक्षा

हाऊस-कीपिंग का ६ से ८ वर्ष तक अनुभवी व्यक्ति जो सामान को सुरक्षित रखने में निपुण हो।

८. सिविल सुपरवाइजर

सिविल इंजीनियरिंग में डिप्लोमाधारी ३ से ५ वर्ष का अनुभवी हो।

९. आई.टी. नेटवर्क इंजीनियर और वेबमास्टर

३ से ५ वर्षों का अनुभवी, जो इन कार्यों की व्यवस्था ठीक से देख सके।

१०. रिसेप्सन में दक्ष महिला

ऐसी महिला जो रिसेप्सन तथा कार्यालय के अन्य सभी कामों को कुशलतापूर्वक संभाल सके।

११. दक्ष माली

परिसर में सुंदर हरियाली और पेड़-पौधों की देखभाल के लिए ६ से ८ वर्ष का अनुभवी माली चाहिए।

१२. टूरिस्ट गाइड

दर्शकों को ठीक से समझा सकने में दक्ष टूरिस्ट गाइड ३ से ५ वर्षों का अमुभवी व्यक्ति हो।

संपर्क – प्रमुख व्यवस्थापक, ग्लोबल विपश्यना फाउंडेशन, पगोडा साइट, एस्सेलवर्ल्ड के पास, गोराई गांव, बोरीवली (प.), मुंबई- ४०००९१.
ईमेल – gvf.hrdept@gmail.com

मंगल मृत्यु

मुंबई के वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री विनोदचंद्र पारेख का गत २७ दिसंबर, रविवार को हृदयगति रुकने से देहांत हुआ। उन्होंने अनेक शिविरों का संचालन करके साधकों को धर्ममार्ग पर लाने का बहुत अच्छा काम किया। इन पुण्यकर्मों के फलस्वरूप दिवंगत का बहुविधि मंगल हो।

अंबेजोगाई (महाराष्ट्र) के सहायक आचार्य श्री बाबासाहेब खेडकर (५५) का २८ दिसंबर, २००९ को हृदयगति रुकने से देहावसान हुआ। उन्होंने मराठवाडा और महाराष्ट्र में अनेक शिविरों का कुशल संचालन किया और अनेकों के कल्याण में सहायक हुए। उनका बहुविधि मंगल हो।

अहमदाबाद के वरिष्ठ सहायक आचार्य श्री रेवचंद शाह ने १९८६ में पहला शिविर किया तब से विपश्यना के प्रति अत्यंत श्रद्धालु और समर्पित हो गये। अनेक शिविरों में सेवा देने के बाद शिविर संचालन के द्वारा अनकों को धर्म में पुष्ट होने में सहायक हुए। धम्ममरुधर, जोधपुर केंद्र की सेवा से भी जुड़े। ५ जनवरी को प्रातःकालीन साधना की और लगभग ८ बजे उन्हें हृदयाघात का झटका लगा और मुस्कराते हुए शरीर छोड़ दिया। दिवंगत का प्रभूत मंगल हो। उनके प्रति हम सब की मंगल कामनाएं।

विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि पर पालि प्रशिक्षण

'वर्ष २०१० के लिए विज्ञप्ति'

तीन महीने का गहन 'पालि-अंग्रेजी' प्रारंभिक पाठ्यक्रम

इस वर्ष तीन महीने का **'पालि-अंग्रेजी'** पाठ्यक्रम **१८ मई २०१०** (सुबह) **से १८ अगस्त २०१०** (सुबह) तक प्रारम्भ किया जा रहा है। (विदेशी छात्रों को **"छात्र वीसा"** के साथ आना अनिवार्य हैं ।)

एक महीने का गहन 'पालि-हिंदी' पाठ्यक्रम

एक महीने का **'पालि-हिंदी'** पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जा रहा है। इस वर्ष यह पाठ्यक्रम **१ मई २०१०** (सुबह) **से ३० मई २०१०** (सुबह) तक बिना अवकाश के चलेगा । (छात्रों को २९ अप्रैल को धम्मगिरि पहुँचना होगा।)

प्रवेश योग्यताएं – वे साधक जिन्होंने --

१. तीन १०-दिवसीय विपश्यना शिविर तथा एक सतिपट्ठान शि. किये हों।

२. एक वर्ष से प्रतिदिन दो घंटे की नियमित साधना करते हों ।

३. एक वर्ष से पंचशील का नियमित पालन करते हो ।

४. कम से कम १२ वीं कक्षा उत्तीर्ण होना चाहिए।

आवेदन-पत्र जमा करने की **अंतिम तिथि ३१ जनवरी २०१०** है।

इस पाठ्यक्रम के पंजीकरण हेतु क्षेत्रीय आचार्य / वरिष्ठ सहायक आचार्य की अनुमति होनी आवश्यक है।

पंजीकरण हेतु ऑनलाइन फार्म भरने के लिए उपलबध लिंक – www.vridhamma.org/Pali-Study-Programme.aspx या विपश्यना विशोधन विन्यास, धम्मगिरि को लिख कर फार्म प्राप्त करके आवेदन करें।

घर-घर में पालि

पालि प्रशिक्षण के लिए धम्मगिरि पर योग्य व्यक्तियों के लिए विधिवत कक्षाएं चलती हैं। परंतु पालि तिपिटक को समझने और बुद्धवाणी का लाभ उठाने के लिए किसी प्रमाण-पत्र की आवश्यकता नहीं होती। अतः पालि के सामान्य ज्ञान के लिए **"घर-घर में पालि"** अभियान चलाते हुए, पालि प्रशिक्षकों के माध्यम से स्थान-स्थान पर **७-दिवसीय पालि प्रशिक्षण कार्यशालाओं** का आयोजन किया जा रहा है। इच्छुक साधक-साधिकाएं निम्न स्थानों पर आयोजित इन कार्यशालाओं का लाभ ले सकते हैं। **पालि प्रशिक्षण कार्यशालाएं : (१)** दि. २२ फरवरी से २ मार्च, २०१०. **स्थान –** कच्छी भवन, हरिहर मंदिर के पास, अनाथ विद्यार्थी गृह के सामने, लकड़गंज, नागपुर-४४००८. **संपर्क –** १. श्री सुधीर शाह, ०९३७०९९०७७१. २. श्री एस. बागड़े, ०९४२२८२३८८६.

(२) (केवल हिंदी में) २७-५ से ४-६-२०१०, **स्थान –** श्री रावतपुरा सरकार इंस्टीट्यूट, कलापुरम, एन.एच. ७५, झांसी रोड, दतिया-४७५६६१. **संपर्क –** श्री नरेशकुमार अग्रवाल, शांतिनिकेतन हॉस्टेल, भारत पेट्रोलियम के पास, शिवाजी नगर, कानपुर रोड, झांसी-(उ.प्र.) मो. ०९९३५५९९४५३, ०९००५७७४५०४. ईमेल – shanti.globaldhamma@gmail.com

(३) (केवल अंग्रेजीभाषियों के लिए) १९-११ से ३०-११-२०१०, **स्थान –** धनवंतरि स्कूल, प्रमुख स्वामी चार रस्ता, मुंद्रा रिलोकेशन साइट, भुज-३७०००१. **संपर्क –** डॉ. श्रीमती शांताबेन पटेल, मो. ०९८२५६६२१५६, नि. ०२८३२-२९१३६६. ईमेल – shantubenpatel@gmail.com

---

नव नियुक्तियां

सहायक आचार्य

१. श्री बिमल कांति चकमा, त्रिपुरा
२. श्री मारुति डग्गावोंकर, मुंबई
३. श्री नवीनचंद्र मेहता, डोंबीवली
४. डॉ. सत्यनारायण शाह, हैदराबाद
५-६. श्री संदीप एवं श्रीमती अनीता शेट्टी, मुंबई
७. श्री डोंगर जोप, पुणे
8. Mrs. Juslin Vilpathage, *Sri Lanka*
9. Ms. Kusuma Rajapakse, *Sri Lanka*
10. Mrs. Kalyani Jayalath, *Sri Lanka*
11. Ms. Chinta Samara-nayake Sri Lanka

बालशिविर शिक्षक

१. श्रीमती प्रतिभा दिघे, नाशिक
२. श्रीमती रेखा खिंवसरा, औरंगाबाद
३. श्री गिरीश पगारे, नाशिक
४. श्रीमती निर्मला पटेल, औरंगाबाद
५. सुश्री नेहा तलवार, नाशिक
६. श्रीमती शांता वर्मा, औरंगाबाद
7. Mr. Chhuon Chheng, *Cambodia*
8. Mrs. Vichea Chhay Chhen, *Cambodia*
9. Ms. Chakriya Chea Khem, *Cambodia*
10 Mr. Sochet Kuoch, *Cambodia*
11. Mrs. Sophat Pich, *Cambodia*
12. Mrs. Narin Po, *Cambodia*
13. Mrs. Leang Siv Seng, *Cambodia*

Registered No. NSK/46/2009-2011

WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011

विपश्यना विशोधन विन्यास के दान-दाताओं को १२५ प्रतिशत की आयकर की छूट

भारत सरकार के वित्त मंत्रालय की ओर से आयकर अधिनियम १९६१ की धारा ३५(१)(३) के अंतर्गत दानदाता को दान की रकम पर १२५ प्रतिशत की छूट मिलती है जो कि विपश्यना विशोधन विन्यास को अब स्थायी रूप से प्राप्त हो गयी है। पहले यह छूट निश्चित समयावधि तक के लिए ही प्राप्त हुआ करती थी। यथा अधिनियम सं. ७१/२००९ दि. २५.०९.२००९ (फा.सं. २०३-१३-२००८ आ.क.वि.-२) के अंतर्गत कर निर्धारण वर्ष २००६-२००७ से आगे अगली सूचना मिलने तक यह छूट प्राप्त है।

इस प्रकार विपश्यना विशोधन विन्यास के सभी दानदाता वित्तीय वर्ष १९९१-९२ से अब तक और आगे भी, अपनी दी गई दान-राशि पर तदर्थ आवेदन कर सकते हैं।

बिन्दास टीवी पर पूज्य गुरुदेव के प्रवचन

बिन्दास टीवी पर प्रतिदिन ४-४५ से ५-३० या ६ बजे तक नित्य पूज्य गुरुदेव के प्रवचन होते हैं। साधक इसका लाभ उठा सकते हैं।

नूतन वर्षाभिनंदन

हर वर्ष की तरह अनेक साधकों की ओर से नव वर्ष के अभिनंदन-पत्र मिले हैं। एक-एक को नव वर्ष की मंगल कामना प्रेषित कर पाने का अवसर नहीं मिल पाया, इसलिए 'विपश्यना' पत्रिका के माध्यम से उन्हें तथा अन्य सभी साधक-साधिकाओं को मेरी असीम मंगल मैत्री पहुँचे! नव वर्ष सबके मानस में धर्म की नवज्योत प्रज्वलित करे! दिनोंदिन प्रज्ञा पुष्टतर होती जाय! धर्म धारण करने का मंगलकारी फल प्रभूत हो! प्रभावशाली हो! सबका मंगल हो!

मंगल मित्र,
सत्यनारायण गोयन्का

दोहे धर्म के

बोधिसत्व गुरुदेव ने, पकड़ी मेरी बांह।
मुक्ति विधायक पथ दिया, बोधिवृक्ष की छांह॥

गुरुवर तेरे पुण्य का, कैसा प्रबल प्रताप।
जागा बोध अनित्य का, दूर हुए भव-ताप॥

धर्म दिया गुरुदेव ने, कैसा रतन अमोल।
मृत्युलोक के जीव को, अमृत का रस घोल॥

सद्गुरु की संगत मिली, मिला धर्म का सार।
जीवन सफल बना लिया, सिर का भार उतार॥

दुर्लभ सद्गुरु का मिलन, दुर्लभ धर्म मिलाप।
धर्म मिला सद्गुरु मिले, मिटे सभी संताप॥

धन्य! धन्य! गुरुदेव जी, धन्य! बुद्ध भगवान।
शुद्ध धर्म ऐसा दिया, होय जगत कल्याण॥

केमिटो टेक्नोलॉजीज (प्रा०) लिमिटेड
८, मोहता भवन, ई-मोजेस रोड, वरली, मुंबई- 400 018
फोन: 2493 8893, फैक्स: 2493 6166
Email: arun@chemito.net
की मंगल कामनाओं सहित

दूहा धरम रा

ग्रहण करूं गुरुदेवजू, थारो सुभ आसीस।
धरम बोध हिरदै धरूं, चरण नवाऊं सीस॥

या गुरुवर री बंदगी, या हि धरम मरयाद।
जीवन जीऊं धरम रो, होवै ना अपराध॥

या ही साची बंदना, होती र'वै अबाध।
तेरी करुणा प्यार री, कदे न भूलूं याद॥

गुरुवर! संपद धरम री, बांट्यां कम नहिं होय।
दिन दिन दूणी ही हुवै, रात चौगुणी होय॥

दूध दही मँह घी घणो, काढण री ना रीत।
गुरुवर दियो बिलोवणो, मथ काढ्यो नवनीत॥

पारस परसै लोह नै, सुवरण देय बणाय।
गुरुवर परस्यो लोह नै, पारस दियो बणाय॥

एक साधक
की मंगल कामनाओं सहित

'विपश्यना विशोधन विन्यास' के लिए प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादकः राम प्रताप यादव, धम्मगिरि, इगतपुरी-422403, दूरभाष : (02553) 244086, 244076.
मुद्रण स्थान : अक्षर चित्र प्रिंटिंग प्रेस, 69- बी रोड, सातपुर, नाशिक-422007. **बुद्धवर्ष** 2553, **माघ पूर्णिमा, ३० जनवरी, 2010**

वार्षिक शुल्क रु. **30/-,** US $ 10, **आजीवन शुल्क** रु. **500/-,** US $ 100. **'विपश्यना' रजि. नं. 19156/71. Registered No. NSK/46/2009-2011**

Licenced to post w**ithout Prepayment of postage** -- WPP Postal Licence No. AR/Techno/WPP-05/2009-2011
Posting day- **Purnima of Every Month,** Posted at **Igatpuri-422403,** Dist. Nashik (M.S.)

If not delivered please return to:-
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - 422403
जिला-नाशिक, महाराष्ट्र, भारत
फोन : (02553) 244076, 244086
फैक्स : (02553) 244176
Email: info@giri.dhamma.org
Website: www.vridhamma.org